No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

08185 **जून, 2018**

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : ***प्रथम*** *प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) युद्ध क्या गान नहीं है ? रुद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव नृत्य, और शस्त्रों का वाद्य मिलकर एक भैरव-संगीत की सृष्टि होती है । जीवन के अंतिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आँखों से देखना, जीवन-रहस्य के चरम सौंदर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव — केवल सच्चे वीर हृदय को होता है, ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरंतर संगीत है ।

(ख) यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना-ही-खोना है
अंधों से शोभित था युग का सिंहासन
दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा
दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन
भय का अंधापन, ममता का अंधापन
अधिकारों का अंधापन जीत गया
जो कुछ सुंदर था, शुभ था, कोमलतम था
वह हार गया ... द्वापर युग बीत गया ।

(ग) बादलों ने सूरज की हत्या कर दी, सूरज मर गया । मैं दूसरों का बोझ ढोता हूँ । मेरे रिक्शे में आईने लगे हैं । आईने में मैं अपना मुँह देखता हूँ । सूरज नहीं रहा । अब धरती पर आईनों का शासन होगा । आईने अब उगने और न उगने वाले बीज अलग-अलग कर देंगे ।

(घ) सच है, भ्रमोत्पादक भ्रमस्वरूप भगवान के बनाए हुए भव (संसार) में जो कुछ है भ्रम ही है । जब तक भ्रम है तभी संसार है बरंच संसार का स्वामी भी तभी तक है, फिर कुछ भी नहीं ! और कौन जाने हो तो हमें उससे कोई काम नहीं ! और कौन जाने हो तो हमें उससे कोई काम नहीं ! परमेश्वर सबका भ्रम बनाए रखे इसी में सब कुछ है । जहाँ भरम खुल गया वहीं लाख की भलमंसी ख़ाक में मिल जाती है ।

(ङ) दम्पती सुखी नहीं हो सके, यह कहना व्यर्थ है । दासों का एक से दो होना प्रभुओं के लिए अच्छा हो सकता है, दासों के लिए नहीं । एक ओर उससे प्रभुता का विस्तार होता है और दूसरी ओर पराधीनता का प्रसार । स्वामी तो साम-दाम-भेद द्वारा उन्हें परस्पर लड़ाकर दासता को और दृढ़ करते हैं और दास अपनी विवश झुँझलाहट और हीन भावना के कारण एक-दूसरे के अभिशापों को विविध बनाकर उससे बाहर आने का मार्ग अवरुद्ध करते रहते हैं ।

2. 'अंधेर नगरी' में व्यक्त यथार्थ का विवेचन कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' की रंगमंचीय संभावनाओं पर विचार कीजिए । *16*

4. 'आधे-अधूरे' के नाट्य-शिल्प की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । *16*

5. 'अंधा युग' के चरित्रों की प्रतीकात्मकता को स्पष्ट कीजिए । *16*

6. 'लोभ और प्रीति' के वैचारिक पक्ष की व्याख्या कीजिए । *16*

7. जीवनी की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए 'कलम का सिपाही' का मूल्यांकन कीजिए । *16*

8. रिपोर्ताज की विशेषताओं के संदर्भ में 'अदम्य जीवन' की समीक्षा कीजिए । *16*

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) असंगत नाटक

(ख) निबंधकार प्रताप नारायण मिश्र

(ग) रेखाचित्र और संस्मरण

(घ) तीसरे दर्जे का श्रद्धेय का प्रतिपाद्य